

झारखंड में एमएसएमई ढांचे और क्षेत्रीय विकास का सांख्यिकीय विश्लेषण

धर्मेन्द्र कुमार *¹

शोधार्थी, वाणिज्य विभाग,
सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, जमशेदपुर, झारखंड

डॉ. पूजा कुमारी ²

वाणिज्य विभाग,
सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला, जमशेदपुर, झारखंड

* *संवाददाता: धर्मेन्द्र कुमार, dharmendrasinghmdg@gmail.com*

सार: झारखंड में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) रोज़गार पैदा करके, एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देकर और ज़िला-लेवल पर बैलेंस्ड ग्रोथ को सपोर्ट करके रीजनल इकोनॉमिक डेवलपमेंट को बढ़ावा देने में अहम भूमिका निभाते हैं। यह स्टडी ज़िला-वाइज़ डिस्ट्रीब्यूशन, एंटरप्राइज़ कैटेगरी, सेक्टर की बनावट और रोज़गार पैदा करने पर सेकेंडरी डेटा का इस्तेमाल करके MSMEs के योगदान का मूल्यांकन करती है। एनालिसिस से पता चलता है कि ईस्ट सिंहभूम और रांची जैसे इंडस्ट्रियल रूप से विकसित ज़िलों में MSMEs का एक बड़ा कंसंट्रेशन है, जबकि माइक्रो एंटरप्राइजेज एंटरप्राइज़ स्ट्रक्चर पर बहुत ज़्यादा हावी हैं। सेक्टर-वाइज़, ट्रेडिंग और सर्विसेज़ का सबसे बड़ा हिस्सा है, जो लिमिटेड मैनुफैक्चरिंग-बेस्ड वैल्यू एडिशन को दिखाता है। अनुमान है कि MSMEs राज्य में 48 लाख से ज़्यादा रोज़गार के मौके देते हैं, जो रोज़ी-रोटी पैदा करने और गरीबी कम करने में उनकी अहमियत को दिखाता है। हालांकि, फाइनेंस तक लिमिटेड एक्सेस, इंफ्रास्ट्रक्चर की कमी, टेक्नोलॉजी को कम अपनाना और स्किल गैप जैसी चुनौतियाँ छोटे और मीडियम एंटरप्राइजेज की ग्रोथ को रोकती हैं। स्टडी का नतीजा यह है कि झारखंड में MSMEs को मज़बूत करने और इनक्लूसिव और सस्टेनेबल रीजनल डेवलपमेंट में उनके योगदान को बढ़ाने के लिए टारगेटेड पॉलिसी सपोर्ट ज़रूरी है।

कीवर्ड: MSMEs, रीजनल इकोनॉमिक डेवलपमेंट, एम्प्लॉयमेंट जेनरेशन, झारखंड.

1. परिचय

झारखंड में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) लोकल रिसोर्स और स्किल को रोज़गार और इनकम के मौकों में बदलकर इलाके के आर्थिक विकास की रीढ़ हैं। MSMEs कम इन्वेस्टमेंट कॉस्ट पर बड़े पैमाने पर रोज़गार पैदा करते हैं, जिससे ग्रामीण और आदिवासी इलाकों से बेरोज़गारी और माइग्रेशन कम होता है। वे मिनरल, खेती और जंगल के प्रोडक्ट की प्रोसेसिंग करके वैल्यू एडिशन को बढ़ावा देते हैं, जिससे माइनिंग के अलावा राज्य की अर्थव्यवस्था में अलग-अलग तरह के बदलाव लाने में मदद मिलती है। MSMEs छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में काम करके संतुलित इलाके के विकास में भी मदद करते हैं, जिससे लोकल मार्केट मज़बूत होते हैं। इसके अलावा, MSMEs एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देते हैं, बड़ी इंडस्ट्री के साथ लिंक बनाते हैं, और फॉर्मलाइज़ेशन के ज़रिए फाइनेंशियल इनक्लूजन को बढ़ावा देते हैं, जिससे झारखंड में टिकाऊ और सबको साथ लेकर चलने वाली आर्थिक ग्रोथ में मदद मिलती है।

2. संबंधित समीक्षाएँ

माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) भारत में इकोनॉमिक ग्रोथ, रोज़गार पैदा करने और सबको साथ लेकर चलने वाले डेवलपमेंट के एक अहम ड्राइवर के तौर पर उभरे हैं। शैलेंद्र एट अल. (2024) ने इस बात पर ज़ोर दिया कि MSMEs गरीबी कम करने, जेंडर इक्वालिटी और ज़िम्मेदार इकोनॉमिक तरीकों को सपोर्ट करके सस्टेनेबल डेवलपमेंट में एक ज़रूरी भूमिका निभाते हैं, साथ ही अलग-अलग सेक्टर में लाखों लोगों को रोज़गार देते हैं। इसी तरह, राठी एट अल. (2022) और सिंह एट अल. (2020) ने इस बात पर ज़ोर दिया कि MSMEs रोज़गार के मौके पैदा करके, एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देकर और बैलेंस्ड रीजनल डेवलपमेंट, खासकर ग्रामीण और आर्थिक रूप से कमज़ोर इलाकों में सपोर्ट करके भारतीय इकोनॉमी की रीढ़ की हड्डी की तरह काम करते हैं। MSMEs में लेबर-इंटेंसिव होती है और उन्हें काफ़ी कम कैपिटल इन्वेस्टमेंट की ज़रूरत होती है, जिससे वे गरीबी कम करने और सोशियो-इकोनॉमिक डेवलपमेंट के लिए असरदार ज़रिया बन जाते हैं (शेली एट अल., 2020; सेठी एट अल., 2018)।

MSME की ग्रोथ में एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट को भी एक अहम फैक्टर माना गया है। परालकर एट अल. (2022) और प्रजापति (2023) ने बताया कि MSMEs एंटरप्रेन्योरशिप और सेल्फ-एम्प्लॉयमेंट को बढ़ावा देते हैं, लेकिन लगातार ग्रोथ के लिए बेहतर स्किल डेवलपमेंट, पॉलिसी सपोर्ट और इंस्टीट्यूशनल सिस्टम की ज़रूरत होती है। पैसे की तंगी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है, और कुमारी एट अल. (2023) जैसी स्टडीज़ से पता चला है कि MUDRA जैसी स्कीमें कम विकसित इलाकों में माइक्रो-एंटरप्राइज़ को सपोर्ट करने में अहम भूमिका निभाती हैं।

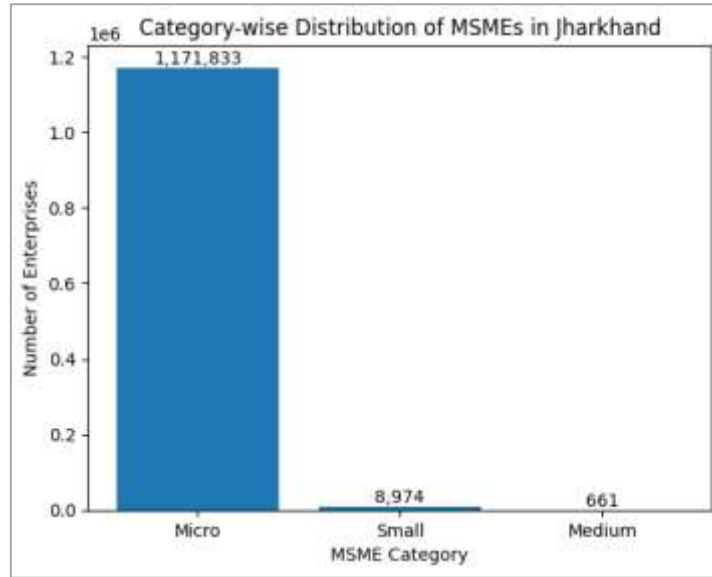
हाल की स्टडीज़ ने भी सबको साथ लेकर चलने वाली एंटरप्रेन्योरशिप की अहमियत पर ज़ोर दिया है। साहू एट अल. (2024) ने दिखाया कि ट्राइबल एंटरप्रेन्योरशिप और माइक्रो-एंटरप्राइज़ आर्थिक और महिला एम्पावरमेंट में योगदान देते हैं, हालांकि सामाजिक-आर्थिक रुकावटें उनकी क्षमता को कम करती हैं। टेक्नोलॉजी में तरक्की ने MSME की कॉम्पिटिटिवनेस को और मज़बूत किया है, क्योंकि असरदार नॉलेज मैनेजमेंट और डिजिटल सिस्टम ऑपरेशनल एफिशिएंसी और बिज़नेस परफॉर्मेंस को बेहतर बनाते हैं (हेरेडिया-कैल्ज़ाडो एट अल., 2019)। कल्चरल और रीजनल फैक्टर भी अलग-अलग इलाकों में MSME परफॉर्मेंस और सस्टेनेबिलिटी पर असर डालते हैं (थम्पी एट अल., 2018)।

कुल मिलाकर, मौजूदा जानकारी बताती है कि MSMEs रोज़गार पैदा करने, एंटरप्रेन्योरशिप डेवलपमेंट और सबको साथ लेकर चलने वाले इलाके के विकास के लिए ज़रूरी हैं। लेकिन, कम फाइनेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर की दिक्कतें और स्किल की कमी जैसी चुनौतियाँ, खासकर झारखंड जैसे डेवलपिंग इलाकों में, उनके पूरे पोटेंशियल को रोक रही हैं। ये कमियाँ झारखंड में इलाके के आर्थिक विकास में MSMEs के योगदान पर एक खास स्टडी की ज़रूरत को सही ठहराती हैं।

3. डेटा विश्लेषण

झारखंड में एमएसएमई के विश्लेषण से उनके स्थानिक वितरण, संरचनात्मक संरचना, क्षेत्रीय पैटर्न और रोजगार योगदान के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है। जिलावार वितरण से पता चलता है कि एमएसएमई पूर्वी सिंहभूम (22,056 इकाइयाँ) और रांची (18,452 इकाइयाँ) जैसे औद्योगिक और शहरी जिलों में अत्यधिक केंद्रित हैं, इसके बाद धनबाद और बोकारो का स्थान है, जो बेहतर बुनियादी ढांचे, औद्योगिक संबंधों और बाजार पहुंच के प्रभाव को दर्शाता है। सभी जिलों में, सूक्ष्म उद्यम हावी हैं, जो अधिकांश पंजीकरण के लिए जिम्मेदार हैं, जबकि मध्यम उद्यम बहुत सीमित हैं, जो कमजोर औद्योगिक पैमाने का संकेत देते हैं। श्रेणीवार विश्लेषण इस पैटर्न की पुष्टि करता है, जिसमें सूक्ष्म उद्यम कुल एमएसएमई का लगभग 99.16% हिस्सा हैं, जबकि लघु और मध्यम उद्यम मिलकर 1 प्रतिशत से भी कम हैं। सेक्टर के हिसाब से डिस्ट्रीब्यूशन से पता चलता है कि ट्रेडिंग एक्टिविटीज़ (लगभग 45%)

ज़्यादा हैं, इसके बाद सर्विसेज़ (35%) और मैनुफैक्चरिंग (20%) हैं। इससे पता चलता है कि झारखंड में MSME की ग्रोथ ज़्यादातर कॉमर्स और सर्विस पर आधारित है, जिसमें इंडस्ट्रियल वैल्यू एडिशन काफ़ी कम है। एम्प्लॉयमेंट एनालिसिस से पता चलता है कि MSMEs लगभग 48 लाख एम्प्लॉयमेंट के मौके पैदा करते हैं, जिसमें माइक्रो एंटरप्राइज़ का हिस्सा सबसे बड़ा है। यह दिखाता है कि रोज़ी-रोटी कमाने और गरीबी कम करने में MSMEs का कितना अहम रोल है। कुल मिलाकर, नतीजे बताते हैं कि झारखंड में रीजनल इकोनॉमिक डेवलपमेंट में MSMEs सेंटर हैं, हालांकि फाइनेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजी अपनाने और स्किल्स से जुड़ी चुनौतियाँ उनके ग्रोथ पोटेंशियल को कम करती रहती हैं।



चित्र 1: झारखंड में MSMEs का कैटेगरी-वाइज़ डिस्ट्रीब्यूशन

यह आंकड़ा झारखंड में MSMEs का कैटेगरी के हिसाब से बंटवारा दिखाता है, जहाँ माइक्रो एंटरप्राइज़ ज़्यादातर यूनिट्स के लिए ज़िम्मेदार हैं। छोटे और मीडियम एंटरप्राइज़ बहुत कम हिस्सा दिखाते हैं। यह पैटर्न छोटे लेवल के बिज़नेस के दबदबे को दिखाता है और राज्य में रोज़गार पैदा करने और ज़मीनी स्तर पर आर्थिक विकास में MSMEs के महत्व को दिखाता है।

4. निष्कर्ष

- झारखंड में MSMEs ज़्यादातर पूर्वी सिंहभूम, रांची, धनबाद और बोकारो जैसे इंडस्ट्रियल ज़िलों में हैं, क्योंकि यहाँ बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और मार्केट एक्सेस है।
- इस सेक्टर में माइक्रो एंटरप्राइज़ का दबदबा है (99% से ज़्यादा), जो छोटे लेवल और सेल्फ़-एम्प्लॉयमेंट एक्टिविटीज़ की अहमियत दिखाता है।
- छोटे और मीडियम एंटरप्राइज़ की बहुत कम संख्या, इंडस्ट्रियल ग्रोथ में कमी और पैसे की तंगी दिखाती है।
- MSMEs में ट्रेडिंग और सर्विसेज़ की हिस्सेदारी लगभग 80% है, जबकि मैनुफैक्चरिंग तुलनात्मक रूप से कमजोर बनी हुई है।
- MSMEs 48 लाख से ज़्यादा नौकरियाँ पैदा करते हैं, रोज़ी-रोटी को सपोर्ट करते हैं और गरीबी कम करते हैं।
- MSMEs के महत्व के बावजूद फाइनेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर और स्किल गैप बड़ी चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

5. उपसंहार

अध्ययन का नतीजा यह है कि माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) झारखंड के रीजनल इकोनॉमिक डेवलपमेंट में रोजगार पैदा करके, एंटरप्रेन्योरशिप को बढ़ावा देकर और बैलेंस्ड डिस्ट्रिक्ट-लेवल ग्रोथ को सपोर्ट करके अहम भूमिका निभाते हैं। एनालिसिस से पता चलता है कि MSMEs पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर फैले हुए हैं, जिनमें ईस्ट सिंहभूम, रांची, धनबाद और बोकारो जैसे इंडस्ट्रियल जिलों में ज्यादा कंसंट्रेशन है। माइक्रो एंटरप्राइजेज का बहुत ज्यादा दबदबा यह दिखाता है कि MSME सेक्टर मुख्य रूप से छोटे पैमाने की और लेबर-इंटेंसिव इकोनॉमिक एक्टिविटीज़ को सपोर्ट करता है, खासकर ग्रामीण और सेमी-अर्बन इलाकों में। MSMEs नॉन-एग्रीकल्चरल रोजगार में अहम योगदान देते हैं और लोकल रोज़ी-रोटी के मौके देकर बेरोज़गारी और माइग्रेशन को कम करने में मदद करते हैं। यह सेक्टर ट्रेड, सर्विसेज़ और मैनुफैक्चरिंग में एक्टिविटीज़ के ज़रिए इकोनॉमिक डाइवर्सिफिकेशन को भी सपोर्ट करता है, जिससे माइनिंग-बेस्ड इंडस्ट्रीज़ पर बहुत ज्यादा डिपेंडेंस कम होती है। उद्यम रजिस्ट्रेशन के ज़रिए फॉर्मलाइज़ेशन बढ़ने से क्रेडिट, सरकारी स्कीम्स और मार्केट के मौकों तक पहुँच बेहतर हुई है। हालाँकि, झारखंड में MSMEs की ग्रोथ फाइनेंस तक सीमित पहुँच, इंफ्रास्ट्रक्चर की कमियों, टेक्नोलॉजी को कम अपनाने और स्किल की कमी जैसी चुनौतियों से रुकी हुई है। झारखंड में टिकाऊ और संतुलित क्षेत्रीय आर्थिक विकास के लिए टारगेटेड पॉलिसी सपोर्ट, बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, बेहतर क्रेडिट सुविधाएं और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम के ज़रिए MSME इकोसिस्टम को मज़बूत करना ज़रूरी है।

संदर्भ

- 1) शैलेंद्र, MD (2024). भारत में सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स (SDGs) को पाने में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) की भूमिका। *सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स और बिज़नेस सस्टेनेबिलिटी*, 228।
- 2) साहू, डी.आर. (2024). सतत आर्थिक विकास के लिए सूक्ष्म उद्यमों और जनजातीय उद्यमिता के मामले में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की भूमिका। *ईएआई समर्थित स्केलेबल सूचना प्रणाली पर लेनदेन*, 11 (4)।
- 3) प्रजापति, एन (2023). रांची जिले में मैनुफैक्चरिंग सेक्टर के खास रेफरेंस के साथ MSMEs में एंटरप्रेन्योरस की चुनौतियों पर एक स्टडी।
- 4) कुमारी, पी., मेहर, बीके, बिरौ, आर., वर्मा, टीएल, सागर, एस., और निनुलेस्कु, पीवी (2023). भारत के उत्तर-पूर्वी राज्यों में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSME) के विकास को बढ़ावा देने में MUDRA योजना की भूमिका का विश्लेषण। *Revista de Stiinte Politice*, (79), 81-100.
- 5) परालकर, पी.एच. (2022). महिला उद्यमिता विकास में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) की भूमिका। *रिसर्च होराइजन्स*, 12।
- 6) राठी, एस., और कुमार, पी. (2022). भारत में माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज (MSMEs) का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव। *कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत यूनिवर्सिटी, रामटेक का जर्नल*, 9, 129-140।
- 7) सिंह, जे.पी (2020). भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का प्रदर्शन और समावेशी विकास में इसकी भूमिका।
- 8) शेली, आर., शर्मा, टी., और बावा, एस.एस. (2020). भारतीय अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों की भूमिका। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ इकोनॉमिक्स एंड फ़ाइनेंशियल इश्यूज़*, 10 (5), 84.
- 9) हेरेडिया-कैल्ज़ाडो, एम., और डुरेंडेज़, ए. (2019). ERP सिस्टम के इस्तेमाल पर नॉलेज मैनेजमेंट और प्रोफेशनलाइज़ेशन का असर और SMEs के कॉम्पिटिटिव फ़ायदों पर इसका असर। *एंटरप्राइज़ इन्फॉर्मेशन सिस्टम्स*, 13 (9), 1245-1274.

- 10) भारत की आर्थिक वृद्धि में एमएसएमई की भूमिका. *जर्नल ऑफ रविशंकर यूनिवर्सिटी*, 24 (1), 19-26.
- 11) थम्पी, पीपी, ज्योतिषी, ए., और बिशु, आर. (2018). भारतीय संदर्भ में हॉफस्टेड पर फिर से विचार: माइक्रो, स्मॉल और मीडियम एंटरप्राइजेज के परफॉर्मेंस पर एंटरप्रेन्योरियल कल्चर के असर को समझना। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप एंड स्मॉल बिजनेस*, 33 (3), 380-399।